## सर्वेक्षण विधि के दोष या सीमाएँ (Demerits or Limitations of Survey method)

(i) गहन अध्ययन का अभाव (Lack of intensive study): सर्वेक्षण विधि का एक दोष यह है कि इसके आधार पर किसी सामाजिक घटना या विषय का गहन अध्ययन संभव नहीं होता है। यहाँ बड़ी जनसंख्या के लिए बड़े प्रतिदर्श का इस्तेमाल करना पड़ता है। अतः इतने बड़े प्रतिदर्श का गहन अध्ययन कठिन बन जाता है। Kerlinger (2002) ने कहा है कि "सर्वेक्षण गहन शोध के लिए नहीं, बल्कि विस्तृत शोध के लिए उपयुक्त होता है।

(ii) व्यवहारिक कठिनाइयाँ (Practical difficulties): सर्वेक्षण विधि में दूसरी विधियों की अपेक्षा समय अधिक लगता है, श्रम भी अधिक करना पड़ता है तथा खर्च भी अधिक लगता है। Random sample के निर्माण करने, साक्षात्कार अनुसूची (interview schedule) की तैयारी करने, उत्तरदाताओं से साक्षात्कार करने तथा प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण तथा निरूपन (treatment) करने में काफी खर्च होता है तथा लम्बे समय तक श्रम करना पड़ता है।

(iii) सर्वेक्षण के संचालन की कठिनाइयाँ (Difficulties of administering survey): सर्वेक्षण प्रविधि को समुचित रूप से उपयोग करने के लिए अनुभव तथा कौशल (skill) की आवश्यकता होती है। वही व्यक्ति इसका इस्तेमाल अच्छे ढंग से कर सकता है, जो अध्ययन के अभिकल्प (design) बनाने, प्रतिदर्श (sampling) के चयन करने, प्रश्नावली के निर्माण, साक्षात्कार के संचालन

तथा आँकड़े (data) के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं निरूपण में निपुन हो। इसके अभाव में सर्वेक्षण के आधार पर सही परिणाम या निष्कर्ष प्राप्त करना कठिन बन जाता है।

(iv) आत्मनिष्ठता का अभाव (Lack of Subjectivity) :- इस विधि का एक दोष यह भी है कि सूचनाओं को प्राप्त करने में प्रश्नावली, साक्षात्कार, अनुसूची आदि विधियों का उपयोग किया जाता है। लेकिन ये सभी विधियाँ वस्तुतः आत्मगत है। इस बात की संभावना बनी रहती है कि सूचनादाता या प्रयोज्य (subject) सही बात को छिपा लें और गलत सूचना दे दें। ऐसी हालत में प्राप्त सूचनाओं के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष कम से कम संदिग्ध (doubtful) बन जाता है।

(v) नियंत्रण का अभाव (Lack of Control) :- इस विधि में नियंत्रण का अभाव रहता है इस कारण इस विधि में क्षेत्र-अध्ययन अथवा प्रतिगामी अध्ययन (expost facto study) की तरह नियंत्रण का अभाव रहता है इस कारण इस विधि की विश्वसनीयता निम्न बन जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सर्वेक्षण विधि के कई गुणों के होते हुए भी कुछ दोष पाए जाते हैं। लेकिन इन दोषों के होते हुए भी इस विधि का उपयोग बड़े पैमाने पर सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए किया जाता है। सच तो यह है कि मानव जीवन का शायद ही कोई पक्ष ऐसा हो, जिसमें सामाजिक तथा वैज्ञानिक अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग नहीं किया जाता हो।

—o—